२२ कम्मट्ठिदिअणुयोगद्दारं

णमियूण पुप्फयंतं सुरहियधवलिद्धपुप्फअंचियचलणं☮ ।
कम्मट्ठिदिअणुयोगं वोच्छामि समासदो पयत्तेण✡ ।। १ ।।

कम्मट्ठिदि त्ति अणुयोगद्दारम्हि❁ भण्णमाणे बे उवदेसा होंति- जहण्णुक्कस्सट्ठिदीणं पमाणपरूवणा कम्मट्ठिदिपरूवणे त्ति णागहत्थिखमासमणा भणंति । अज्जमंखुखमासमणा पुण कम्मट्ठिदिसंचिदसंतकम्मपरूवणा कम्मट्ठिदिपरूवणे त्ति भणंति । एवं दोहि उवएसेहि कम्मट्ठिदिपरूवणा कायव्वा । एवं कम्मट्ठिदि त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

सुगन्धित, धवल और समृद्ध पुष्पों द्वारा जिनके चरणोंकी पूजा की गयी है उन पुष्पदन्त जिनेन्द्रको नमस्कार करके मैं प्रयत्नपूर्वक संक्षेपमें कर्मस्थिति अनुयोगद्वारका कथन करता हूं ।। १ ।।

र्मकस्थिति अनुयोगद्वारके निरूपण करनेमें दो उपदेश हैं- जघन्य और उत्कृष्ट स्थितियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा कर्मस्थितिप्ररूपणा है, ऐसा नागहस्ती क्षमाश्रमण कहते हैं । परन्तु आर्यमंक्षु क्षमाश्रमण कहते हैं कि कर्मस्थितिसंचित सत्कर्मकी प्ररूपणाका नाम कर्मस्थितिप्ररूपणा है । इस प्रकार दो उपदेशोंके द्वारा कर्मस्थितिकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस प्रकार कर्मस्थिति अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

☮ अ-काप्रत्योः ' अवियचलणं ', ता-मप्रत्योः ' अंचियचलणं ' इति पाठः । ✡ अतोऽग्रे प्रतिष्वत्र ' अहं ' इत्येतदधिकं पदं समुपलभ्यते । ❁ ' अणुयोगद्दारेहि ' इति पाठः ।